पाठ - 28 : जिजीविषा की विजय

मुख्य विषय

यह जिजीविषा और संकल्पशक्ति से जुड़े साहित्यकार और विचारक डा. रघुवंश के व्यक्तित्व पर आधारित संस्मरण है जिसके लेखक प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया हैं। उन्होंने डा. रघुवंश को अपने स्मृतिपटल पर उभारा है और उनके व्यक्तित्व की मुख्य विशेषताएँ प्रस्तुत की हैं।अपंगता जीवन की गतिशीलता में बाधक नहीं हो सकती, डा. रघुवंश इसके साक्षात उदाहरण हैं। मन की सुदृढ़ता और संकल्प शक्ति ही व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आधार है। डा. रघुवंश इसी संकल्प-शक्ति के कारण निरंतर लिखते रहे और सफलता की ऊँचाइयों को छूते रहे। उनमें आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ है।

संस्मरण की प्रमुख विशेषताएँ हैं - परिचित प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व, चरित्र का स्पष्टीकरण, आत्मीयता, तटस्थ दृष्टि और रोचक शैली। इस पाठ में इन तत्वों का सुंदर समायोजन हुआ है।

तत्वों के आधार पर विश्लेषण

- संस्मरणात्मक अभिव्यक्ति : लेखक डा. रघुवंश के नाम से विद्यार्थी जीवन से परिचित। उनकी पहली भेंट भारतीय हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में हुई। डा. रघुवंश को देखकर लेखक दंग रह गए कि वे एक पैर से निरंतर तेज़ी से लिखते जा रहे थे। उन्हें अभी तक यह नहीं पता था कि डा. रघुवंश दोनो हाथों से लाचार हैं। वह उनके व्यक्तित्व से बेहद प्रभावित हुए। लेखन ने अनेक मार्मिक और प्रेरणादायक प्रसंगों को प्रस्तुत कर हमें डॉ. रघुवंश की अनोखी विशेषताओं से परिचित कराया है।
- घटनाओं की सत्यता और चरित्र का स्पष्टीकरण : यहाँ हम घटनाक्रम के साथ-साथ हम डा. रघुवंश के व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों का परिचय प्राप्त करते चलते हैं। उन्होंने जो लेखन कार्य किए, वे बहुत से उन विद्वानों से भी संभव न हो सके जिन्होंने मज़बूत हाथ लेकर जन्म लिया।

  उनकी संकल्पशक्ति, सौम्य व्यक्तित्व, कर्मयोगी, आत्मविश्वासपूर्ण कार्य करने की क्षमता, आगे बढ़ने की योग्यता, विद्रोही और जुझारू प्रकृति विभिन्न रूपों में दिखाई देती हैं। डा. रघुवंश बाह्य और आंतरिक रूप में तो स्वच्छ थे ही, अर्थ संबंधी मामलों में भी उनमें शुचिता दिखाई देती थी।
- आत्मीयता तथा तटस्थ दृष्टि : संस्मरण में हम यह पाते हैं कि लेखक डा. रघुवंश के व्यक्तित्व से बहुत अधिक प्रभावित हैं और अपनी स्मृतियों के आधार पर अनुभूत सत्यों और घटनाओं को प्रकट करते हुए वे उनके चरित्र को खोलते चले जाते हैं। एक-एक करके उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व से जुड़ी विशेषताएँ प्रकट होती चलती हैं। लेखक उनके कृतित्व को समसामयिक परिवेश के साथ जोड़ते चलते हैं।
- डा. रघुवंश ने अनुशीलन पत्र का अनेक वर्षों तक संपादन किया। अभूतपूर्व कृति के रूप में 'जेल और स्वतंत्रता' शीर्षक से पत्रों का संग्रह प्रकाशित हुआ। वे एक विचारक के रूप में अधिक मुखर रूप में त्रैमासिक पत्रिका - 'क ख ग' से सभी के सामने आए। उन्होंने इस पत्रिका का संयोजन किया तथा संपादक मंडल

में भी प्रमुख भूमिका निभाई। 'मानव पुत्र ईसा: जीवन और दर्शन' कृति द्वारा डा. रघुवंश का प्रखर विचारक रूप निखर कर आया जिसके लिए उन्हें सन् 1985 में श्री भगवान दास पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अन्य अनेक सम्मानों में बिड़ला ट्रस्ट द्वारा 'शंकर पुरस्कार' तथा उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रतिष्ठित 'भारत भारती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

- रोचक भाषा-शैली : लेखक की भाषा सरल परंतु शुद्ध साहित्यिक भाषा है। तटस्थ, निकटस्थ, संगोष्ठी, पर्यवेक्षण, अभिक्रिया, समुच्चय, नव-वल्कल, शुचिता, परिलक्षित, सर्जनात्मक, चैतन्य, बौद्धिक, प्रतिद्वन्द्विता जैसे शुद्ध साहित्यिक शब्द संस्मरण को प्रभावपूर्ण बनाते हैं। विषय के अनुसार गंभीर परंतु बोधगम्य भाषा है और पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग भी मिलता है। भावात्मक, वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक शैली के संयोजन से यह संस्मरण प्रभावपूर्ण बन पाया है।

अपना मूल्यांकन कीजिए

1. इस संस्मरण से आपको क्या शिक्षा मिलती है? स्पष्ट कीजिए।
2. लेखक ने एक दिव्यांग व्यक्ति को आधार बनाकर इस संस्मरण को क्यों लिखा?
3. संस्मरण के तत्वों के आधार पर इस पाठ की समीक्षा कीजिए।
4. व्याख्या कीजिए :

   क. अर्थ की शुचिता के वे ज्वलंत उदाहरण हैं। हर प्रकार की स्वच्छता की भावना उनके स्वभाव का अभिन्न अंग रही है।

   ख. संकल्प ही तो चेतना का वह गुण है जिसमें मन की दृढ़ता, इच्छा, विचार, चिंतन, विमर्श विद्यमान रहते हैं।